दैनिक भास्कर

कैसी हो शिक्षा प्रणाली

'सभी' पर नहीं 'प्रत्येक' पर देना होगा जोर

पिछले दो दशकों में भारत में शिक्षा क्षेत्र में सुधार लाने के लिए कई प्रयास किए गए हैं। जैसे नए स्कूलों का विस्तार, विशिष्ट संस्थानों को कुछ नया करने की प्रेरणा देना, शिक्षा में तकनीक के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करना तथा स्कूली शिक्षा के लिए अवसर एवं वित्तपोषण उपलब्ध कराना। शैक्षणिक संस्थानों में पारदर्शिता और प्रशासन में सुधार लाने तथा उच्च शिक्षा में छात्रों की संख्या में सुधार लाने के लिए छोटे-बड़े कई प्रयास किए गए हैं। नए विचार और संभावनाओं को प्रोत्साहन मिल रहा है, जिससे छात्र अपनी गति और क्षमता के अनुसार आगे बढ़ सकें।

निम्न आय वर्ग से बड़ी संख्या में छात्र स्कूल और कॉलेज पहुंचे हैं, लेकिन कॅरिअर तत्परता के संकेतकों में कुछ खास वृद्धि नहीं हुई है। हर बच्चे में अपनी प्रतिभा, अपनी रुचि, अपने विचार होते हैं। पिछले कुछ दशकों में शिक्षा से जुड़े 'सभी' पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। सभी छात्रों को ग्रेजुएट होने के लिए क्या करना या क्या जानना जरूरी है? सभी स्कूलों को किस मुद्दे के लिए जवाबदेह होना चाहिए? हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि 'सभी छात्रों' को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा का एक समान अधिकार मिले? ये महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं और हमने इन क्षेत्रों में प्रगति की है। किंतु अब हमारा फोकस 'सभी' से हटकर 'प्रत्येक' पर आ गया है। क्या 'हर' बच्चे को वो मिलता है, जिसकी उसे जरूरत है? अगर ऐसा नहीं है, तो इस दिशा में क्या किया जा सकता है? अगर भारत इसमें सफल होता है तो हमारी शिक्षा प्रणाली को ऐसा रूप देना होगा कि यह हर व्यक्ति में छिपी क्षमता और प्रतिभा का विकास कर सके।

6 बिंदु जो लागू हों तो लाभ हो

1. स्कूल में हर छात्र में छिपी प्रतिभा को पहचान कर प्रोत्साहित किया जाए। सभी अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय लर्निंग, विकास, कॅरिअर के अवसरों को ध्यान में रख कर स्कूल अपना पोर्टफोलियो बनाएं।
2. नई बुनियादी संरचनाएं ऐसी हों जो छात्रों में आजीवन लर्निंग को प्रोत्साहित करें।
3. शिक्षा मल्टी-मॉडल हो, स्कूल के दायरे से बाहर भी स्टूडेंट्स की क्षमता पर ध्यान दिया जाए। गरीबी, अपंगता, भाषा की बाधाओं के कारण अवसरों से वंचित स्टूडेंट्स को सीखने का मौका मिले।
4. स्कूली शिक्षा को परिणाम उन्मुख बनाया जाए। छोटे बच्चों को कौशल सिखाया जाए और बड़े बच्चों को इस लायक बनाया जाए कि वे स्वयं अपने लिए उपयुक्त कॅरिअर चुनने में सक्षम हो सकें।
5. अध्यापक दो तरह के हों- एक स्टूडेंट्स के साथ व्यक्तिगत, गहन संबंध बनाएं और दूसरे विशेषज्ञ जो विशेष प्रकार की जानकारी में सक्षम हों। पहला समूह स्कूलों में योगदान दे, जबकि दूसरा समूह उद्योग जगत में योगदान दे।
6. वित्तपोषण को बढ़ावा देकर परिणाम उन्मुख बनाना चाहिए। यह कमजोर आर्थिक व सामाजिक पृष्ठभूमि से आए स्टूडेंट्स की लर्निंग एवं विकास संबंधी आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण है।

हर विद्यार्थी को आधुनिक लर्निंग, इंटर्नशिप, पेशेवर नेटवर्क एवं विकास के अवसर उपलब्ध कराकर शिक्षा को नए आयाम दिए जा सकते हैं और शिक्षा के प्रति मानसिकता में सकारात्मक बदलाव लाए जा सकते हैं। -शांतनु रूज (फाउंडर व सीईओ, स्कूलगुरु एडुसर्व प्रा.लि)

सवाल और सुझाव के लिए ई-मेल कीजिए
education@dbcorp.in